नवग्रहों का
शुभागमन
नवग्रहों का
शुभागमन
10·3
प्रज्ञा देवी

ओ३म्

नवग्रहों का शुभागमन

प्रज्ञा देवी आचार्या-
पाणिनि कन्या महाविद्यालय
वाराणसी-१०

आत्म-निवेदन
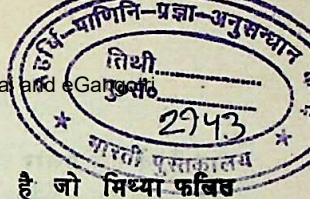
नवग्रह पूजा पाखण्डवाद की एक ऐसी कड़ी है जो मिथ्या फलित ज्योतिष की पूरक कही जा सकती है। मेरे प्यारे देश की भोली-भाली जनता को अकर्मण्यता की नींद में एकबार कर्मकाण्डियों ने सुला दिया किन्तु इससे भी उन स्वार्थान्धियों का कुछ बना नहीं अतः उन्हीं लोगों ने जन-साधारण के मन-मस्तिष्क में नवग्रहों के नाम पर एक भीषण भय पैदा किया कि—"ये आकाशस्थ सूर्य, चन्द्र, बुध आदि ९ ग्रह जब मनुष्यों पर कुपित हो जाते हैं तो बड़ा अकल्याण करते हैं अतः इनका धरती पर आवाहन और पूजा करके इन्हें शान्त करने का उपाय करना चाहिये।" विश्व का सबसे बड़ा झूठ इस नवग्रह पूजा के माध्यम से कर्मकाण्डियों द्वारा बोला गया जिसका परिणाम है कि जनता सच्चे निराकार ईश्वर की पूजा से विरत हो गई तथा भयग्रस्त होकर दर-दर की ठोकरें खाते हुवें पण्डे-पुजारियों के चक्कर में घूमने लगी।

जिस वेद में कहा हो कि—**यथा द्यौश्च पृथिवी च न बिभीतो न रिष्यतः एवा मे प्राण मा बिभेः** (द्र० अथर्व० सम्पूर्ण सूक्त २।१५) अर्थात् जिस प्रकार द्यौलोक और पृथिवी लोक ईश्वरीय शक्ति से सञ्चालित हैं और ये न कभी डरते हैं न कभी दुःखी होते हैं उसी प्रकार ऐ मेरे प्राण ! तुम कभी मत डरो।" जिस वेद में—**अभयं मित्रादभयममित्रात्** (अथर्व १९।१५।६) कहकर अपने मित्र तथा शत्रु से भी निर्भय रहने की बार-बार शिक्षा दी गई हो उस निर्भीकता की शिक्षा देने वाले पवित्र वेद मार्ग का परित्याग करके पुराण-पन्थियों ने केवल अपने स्वार्थ हेतु जनता को गुमराह कर दिया। आश्चर्य है कि जनता इतनी अविद्याग्रस्त हो गई कि वह यह भी नहीं समझ सकी कि सूर्य, चन्द्रादि ग्रह इस सीमित धरती पर पण्डित जी के आवाहन से आयेंगे कैसे ? और कहाँ बैठेंगे ?

ग्रह सम्बन्धी मिथ्या विश्वास पर टिप्पणी करते हुवे पी. वी. काणे ने अपने 'धर्मशास्त्र का इतिहास' भाग चतुर्थ में लिखा है कि-"जो लोग ऐसा विश्वास करते हैं कि सभी घटनायें ग्रहों एवं तारों से प्रभावित एवं अभि-

भूत हैं, वे एक प्रकार से भूल करते हैं। वे एक ओर भगवान् के नियन्त्रण को नगण्य ठहरा देते हैं और मानव की स्वतन्त्र इच्छा-शक्ति को छीन लेते हैं। यदि ज्योतिषी ग्रहों के द्वारा निर्देशित घटनाओं को रोक नहीं सकते या उन्हें निरर्थक नहीं सिद्ध कर सकते तो उनके पूर्व ज्ञान से हमें क्या लाभ है? यदि वे नियति की घटनाओं को रोक सकते हैं या उन्हें निरर्थक सिद्ध कर सकते हैं तो वे इस सिद्धान्त को किस प्रकार प्रश्रय दे सकेंगे कि ग्रहों से ही घटनायें उद्भूत होती हैं[1]।"

पाठक देखें फलित ज्योतिष और इन नवग्रहों का कितना स्पष्ट खण्डन श्री **डॉ॰ पाण्डुरंग वामन** द्वारा यहाँ किया गया है। जब कि वे अपने 'धर्मशास्त्र का इतिहास' में प्रायः सर्वत्र मध्यकालीन प्रचलित हैं। प्रथाओं के लिये पौराणिक ग्रन्थों को ही आधार मानते हैं। ईश्वरीयशक्ति को नगण्य मानना और उस परम प्रभु द्वारा ही नियन्त्रित जड़ शक्तियों से डराना धमकाना, मनुष्य की स्वतन्त्र इच्छा-शक्ति को नष्ट करना यह कितना बड़ा पाप है धन-लोलुपता के अतिरिक्त इसमें कोई कारण ही नहीं कि ग्रहों की लीला में लोगों को फँसाया जाये।

महर्षि दयानन्द ने **सत्यार्थ प्रकाश** के तृतीय समुल्लास में नवग्रहों के मिथ्याडम्बर का खूब खण्डन किया है जो द्रष्टव्य है। उन्होंने लिखा है कि—"जैसी यह पृथिवी जड़ है वैसे ही सूर्यादि लोक हैं। वे ताप और प्रकाशादि से भिन्न कुछ भी नहीं कर सकते। क्या ये चेतन हैं? जो क्रोधित होके दुःख और शान्त होके सुख दे सकें?" महर्षि दयानन्द जन्मपत्री को शोकपत्री कहते हैं क्योंकि ज्योतिर्विदाभास लोग माता-पिता को जन्मपत्री द्वारा ग्रहों से भयभीत करते हैं। दुःख है कि आज अच्छे-अच्छे आर्य नर-नारी भी इस जाल में शीघ्र फँस जाते हैं क्योंकि स्वयं स्वाध्याय-विरत रहते हैं और मायाजाल में फँसे हुवे सच्चे ईश्वराराधन से बहुत दूर होते हैं। वस्तुतः आर्य कहलाना एक अतिकठिन कार्य है।

1. देखे पृ॰ ३११-३१३॥

नवग्रहों के इस खोखलेपन पर मैं आज से दो वर्ष पूर्व जब अपने कुछ विचार व्यक्त कर रही थी तो विद्यालयीय परिवार द्वारा यह आग्रह हुआ कि मैं इन विचारों को लेखबद्ध कर दूँ। मैं तैयार हुई और देखते ही देखते प्रिय **बेटी माधुरी** ने सभी उपादान इसके लिये सँजो दिये और दो घण्टे में लिखा गया किन्तु विषय वस्तु ने एक नाटिका का स्वरूप ले लिया। मैंने सोचा भगवदिच्छा ...। साहित्यकार की श्रेणी में तो यह बहुत बड़ा दुःसाहस है पर मेरी कन्यायें मञ्च पर रोचकता से इसे प्रस्तुत कर दें बस यही एक लक्ष्य मेरे इस लेखन में था, जो पूर्ण हुआ। १९८६ के **पाणिनि कन्या महाविद्यालय** के त्रिदिवसीय वार्षिकोत्सव का यह प्रमुख कार्य था जिसे जनता ने आकण्ठमग्न होकर खूब देखा और सुना तथा भरपूर सराहा।

मेरे प्रत्येक इस प्रकार के लेखन में **स्नातिका बेटी माधुरी** का धैर्य ही मुझे सफलता की ओर उन्मुख करता है अतः मेरा बार-बार इस बाला को आशीर्वाद है।

वार्षिकोत्सव में मञ्चन के समय आ० स० हरथला कालोनी मुरादाबाद के तत्कालीन स्वाध्यायशील मन्त्री श्री **महावीर सिंह मुमुक्षु** (जिनकी पुत्री **कु० सुमति** यहाँ अध्ययन करती है) भी उपस्थित थे जिन्होंने अपने यहाँ जाकर इन कार्यक्रमों की बड़ी प्रशंसा की जिसका परिणाम है कि इस पुस्तिका को जनता जनार्दन तक पहुँचाने हेतु प्रकाशित करने का सम्पूर्ण व्यय भार आ० स० हरथला कालोनी मुरादाबाद के वर्त्तमान प्रधान **श्री चमनलाल निझावन** एवं मन्त्री **श्री मोहनलाल तनेजा** ने अपनी समाज द्वारा कराने का संकल्प लिया। हरथला कालोनी **आ० स० मुरादाबाद** द्वारा प्रचारार्थ और भी बहुत उत्तमोत्तम कार्य प्रायः किये जाते हैं एतदर्थ सभी पदाधिकारियों को मेरी ओर से बहुत २ साधुवाद है।

इस पुस्तिका से प्रत्येक पाठक गण सत्य के आग्रही बनकर विशेष लाभ उठायें बस यही एक चाहना है।

निवेदिका—

प्रज्ञा देवी

पौष शु० १४ वि० सं० २०४४

२ जनवरी १९८८ प्राचार्या—पाणिनि कन्या महाविद्यालय, वाराणसी-१०

नवग्रहों

का

शुभागमन

पात्र-सूची

पण्डित जी — चेला

दो यजमान

अष्टवर्षीया एक बालिका

सूर्य — चन्द्र

मङ्गल — बुध

बृहस्पति — शुक्र

शनैश्चर — राहु

केतु

पञ्चवर्षीया द्वितीय लघु बालिका (प्रसाद माँगने आती है)

शीला, सुमित्रा, प्रमिला

(ये तीन महिलायें जिनकी वेशभूषा साधारण है ।
प्रमिला भोजपुरी भाषा-भाषी है)

एक महिला

(सुधारवादी खद्दरवस्त्रधारिणी)

ओ३म्

नवग्रहों का शुभागमन

[खुला बरामदा जिसके सामने की ओर जाली का दरवाजा है। बरामदे में एक सजी हुई चौकी है जिस पर मस्तक पर तिलक तथा धोती कुर्त्ता पग्गड़ धारण किये हुए पण्डित जी विराजमान हैं, जिनके सामने एक खुली पुस्तक रखी है, बगल मे उनके एक चेले भी विराजमान हैं।

पास ही धूप, दीप, नैवेद्य, अक्षत, पुष्प-मालायें एक थाली में रखी हैं। एक छोटा हवन कुण्ड भी सामने रखा है जिसके बगल में सजा हुआ कलश और उस पर दीपक स्थापित हैं। पण्डित जी के सामने सजा हुआ एक सुन्दर काष्ठ का पीढ़ा भी है जिस पर आटे एवं रोली से रङ्ग बिरङ्गी रेखायें खींच कर कुल ९ खाने बने हैं, प्रत्येक खाने में मसूर, उड़द, मूंग, सुपारी अरहर की दाल थोड़े-थोड़े रखे हैं। ये ९ खाने द्यौलोक के सूर्य, चन्द्र, बुध आदि एक-एक नवग्रह के बैठने के लिये पण्डित जी ने पीढ़े पर बनाये हैं जिनका आवाहन भी पण्डित जी मन्त्रोच्चारण पूर्वक करेंगे।

पण्डित जी के पास ही पूर्वाभिमुख यजमान दम्पती हाथ जोड़कर बैठे हैं जो मुखमुद्रा से तो सुशिक्षित प्रतीत होते हैं किन्तु धर्मभीरु होने से कुछ भीत सिकुड़े हुवे से बैठे हैं। सर्वप्रथम पण्डित जी मन्त्रोच्चारण पूर्वक दीपक जलाते हैं। मन्त्रोच्चार धीरे-धीरे उनका चेला भी करता है]।

पण्डित—

ओ३म्—श्रीश्चं ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण॥

(यजु० ३१।२२)

(पण्डित जी दीपक जलाते हैं) हाँ भई यजमान ! लाओ सवा-२ रुपये कलसे पर चढ़ाओ । (तीन बार शंख बजाकर पुनः मन्त्रपाठ—)

ओ३म्–आ कृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥
(यजु० ३३।४३)

ओम् भूर्भुवः स्वः सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठ । सूर्याय नमः ॥१॥

ओ३म्–इमं देवा असपत्नꣳ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳ राजा ॥ (यजु० ९।४०)

ओम् भूर्भुवः स्वः चन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ । चन्द्रमसे नमः ॥२॥
(लो चढ़ाओ यजमान)

ओ३म्–अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् । अपाꣳ रेताꣳसि जिन्वति ॥ (यजु० ३।१२)

ओम् भूर्भुवः स्वः भौम इहागच्छ इह तिष्ठ । भौमाय नमः ॥३॥

ओ३म्–उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सꣳसृजेथामयं च । अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥ (यजु० १५।५४)

ओम् भूर्भुवः स्वः बुध इहागच्छ इह तिष्ठ । बुधाय नमः ॥ ४ ॥

(यजमानों के हाथ में अक्षत देकर—लो डालो यजमान)

ओ३म्–बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद् विभाति क्रतुमज्जनेषु ।
यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ।
उपयामगृहीतोऽसि बृहस्पतये त्वैष ते योनिर्बृहस्पतये त्वा ॥
(यजु० २६।३)

ओम् भूर्भुवः स्वः बृहस्पते इहागच्छ इह तिष्ठ ।
बृहस्पतये नमः ॥ ५ ॥

ओ३म्–अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः सोमं
प्रजापतिः । ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस
इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु ॥ (यजु० १९।७५)

ओम् भूर्भुवः स्वः शुक्र इहागच्छ इह तिष्ठ । शुक्राय नमः ॥६॥
(लो चढ़ाओ यजमान)

ओ३म्–शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शं योरभिस्रवन्तु
नः ॥ (यजु० ३६।१२)

ओम् भूर्भुवः स्वः शनैश्चर इहागच्छ इह तिष्ठ । शनैश्चराय नमः ॥७॥

ओ३म्–काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि । एवा नो दूर्वे
प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥ (यजु० १३।२०)

ओम् भूर्भुवः स्वः राहो इहागच्छ इह तिष्ठ । राहवे नमः ॥८॥

ओ३म्–केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे । समुषद्भिरजायथाः ॥
(यजु० २९।३७)

ओम् भूर्भुवः स्वः केतो इहागच्छ इह तिष्ठ । केतवे नमः ॥ ९ ॥
(लो डालो यजमान, अक्षत के साथ कुछ द्रव्य भी चढ़ाओ)

चेल।—

ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी
भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रः शनि-राहु-केतवः
सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ॥

अंगेषु सूर्यो यवनेषु चन्द्रो भौमो ह्यवन्त्यां मगधेषु सौम्यः ।
सिन्धौ गुरुर्भोजकटेषु शुक्रः सौरः सुराष्ट्रे विषये बभूव ॥
म्लेच्छेषु केतुश्च तमः कलिंगे जातो यतोऽतः परिपीडितास्ते ।
स्वजन्मदेशान्परिपीडयन्ति ततोऽभियोज्याः क्षितिपेन देशाः ॥

[पर्दे के पीछे से मञ्च में तीव्र प्रकाश]

पण्डित—अरे रे ये क्या······ये क्या······क्या ओह !

(एक बालिका का प्रवेश)

बालिका—महाराज ! (पण्डित-हूँ !) आप ने अभी नवग्रहों को बुलाया था न ! (पीढ़े को संकेत करती हुई) इह तिष्ठ, इह तिष्ठ कह कर उनके बैठने का स्थान भी बताया था। सो महाराज, लगता है वही आ रहे हैं। इतना बड़ा प्रकाश सूर्य देवता का ही तो हो सकता है।

पण्डित—अरे पागल ! द्यौलोक के सूर्य देवता कैसे आयेंगे ? यदि वे आ भी गये तो हम सभी जल मरेंगे।

बालिका—पर आपने तो सूर्य देवता, चन्द्रमा देवता, बुध देवता, बृहस्पति देवता आदि सभी को नाम ले लेकर एक साथ बुलाया था न ! इहागच्छ इह तिष्ठ, इह तिष्ठ ······। (बीच में ही)

पण्डित—अरे बुलाया ही था न ! पर वो आते कहाँ ? ······

(मञ्च पर सूर्य देवता का प्रवेश)

सूर्य—अच्छा पण्डित जी ! अब समझे, आप भी बच्चों की तरह खेल किया करते हैं। आप तो अभी नवग्रह पूजा करा रहे थे न !

और वेद के मन्त्र बोल बोल कर सूर्य, चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति आदि सभी द्यौलोक स्थित ग्रहों को बुला रहे थे। अब थोड़ा सा ही उनका प्रकाश आया तो चौंक कर भागने लगे, (पार्श्व से – हा ! हा ! हा ! हा ! की ध्वनि) कहिये जब समूचे सूर्यलोक का प्रकाश आप और हम पर पड़ने लग जायेतो क्या दशा होगी आपकी? कोई जीवितभी बचेगा? सैकड़ों मील दूर से जिस सूर्य का प्रकाश सहन नहीं होता उस सूर्य को आप यहाँ बुलाकर बिठा लेंगे ? (इतना कहकर अट्टहास करता है) आपका कहना तो ऐसे ही है जैसे कोई कहे कि हमने सारे ब्रह्माण्ड को मुट्ठी में दबा लिया है। महाराज! देवता! आप पृथिवो पर बैठे हैं; सूर्य पृथिवी से १३ लाख गुना बड़ा है, यह भी पता है आपको ? (चेला–तिलमिलाकर, हाँ पता है) हाँ चेले जी ! यदि हम सौ मील प्रतिघण्टे की रफ्तार से पृथिवी से सूर्य की ओर चलें तो वहाँ तक पहुँचने में १०५ वर्ष लग जायेंगे, पुनः आप उन्हें पृथिवी पर कैसे बुला ले रहे हैं? है न, कोरा खेल यह— निम्न मन्त्रों को जोर दे देकर बोलता है)

ओम् भूर्भुवः स्वः सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठ। सूर्याय नमः। ओम् भूर्भुवः स्वः चन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ। चन्द्रमसे नमः। ओम् भूर्भुवः स्वः बुध इहागच्छ इह तिष्ठ। बुधाय नमः ॥

पण्डित—अरे तुम बीच में कैसे टपके ? हमें पूजा कराने दो ···

(मञ्च पर पार्श्व से चन्द्र का प्रवेश)

चन्द्र—पण्डित जी ! यही नहीं, हम भी आ गये हैं, बताइये, आपने चन्द्रमा को भी तो बुलाया था न ! अरे ! इतना ही नहीं आप तो हम ग्रहों के जन्म, स्थान एवं गोत्रादि भी श्लोकों द्वारा पढ़ रहे थे, कहिये, आप कह रहे थे न ?

[बालिका शनैः २ मञ्च के पीछे चली जाती है]

अंगेषु सूर्यो यवनेषु चन्द्रो भौमो ह्यवन्त्यां मगधेषु सौम्यः ।
सिन्धौ गुरुर्भोजकटेषु शुक्रः सौरः सुराष्ट्रे विषये बभूव ॥

म्लेच्छेषु केतुश्च तमः कलिंगे जातो यतो ऽतः परिपीडितास्ते।
स्वजन्मदेशान्परिपीडयन्ति ततो ऽभियोज्याः क्षितिपेन देशाः ॥

(सूर्य–बहुत अच्छा) अर्थात्–अंग देश में सूर्य, यवन देश में चन्द्रमा, अवन्ती में मंगल, मगध नगरी में बुध, भोजकट में शुक्र, सुराष्ट्र में शनि, इसी प्रकार म्लेच्छ देश में केतु कलिंग देश में राहु हुए जिससे सब पीड़ित हैं।

(मङ्गल देवता का प्रवेश)

मङ्गल—अरे ! रे ! अरे ! ये जो स्थान चित्र खींच २ कर सूर्य, चन्द्रमा मंगल बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु एवं केतु इन नवग्रहों के बैठने का स्थान आपने बनाया है इतने में तो हमारा अपना शरीर तक नहीं आ सकता, हम तक नहीं बैठ सकते। समूची पृथिवी में अकेला सूर्य तक नहीं आता तो फिर समूचे ग्रहों को बुलाकर आप इन रेखाओं के अन्दर उन्हें समाविष्ट कर रहे हैं ? जिनमें गिनती के दस बेर ही रखे जा सकते हैं। (अट्टहास हा ! हा! हा !)

पण्डित जी—(क्रोध एवं हैरानी से) ओह ! मैं पूछता हूँ तुम लोग हो कौन ? क्यों हमसे उलझ रहे हो ?

(बुध का प्रवेश)

बुध—हम बताते हैं–हम कौन हैं, आप जिन्हें बुला रहे थे न ! उनका आना तो असम्भव है क्योंकि न वे यहाँ पहुँच सकते हैं न बैठ सकते हैं। ये सब जड़देव परमेश्वर की व्यवस्थानुसार चल रहे हैं। वे सब प्रकाशकों के प्रकाशक प्रभु सबको चला रहे हैं। ये आपके घर के बेटा बेटी नहीं हैं (सब–हँस पड़ते हैं) कि आपने पुकारा और आपके पास चले आयें, पर आप हमें आज, उनके मानव प्रतिनिधि समझ लीजिये जो आपसे बात करने आ गये हैं।

[शेष सभी ग्रहों का मञ्च पर एक साथ प्रवेश]

सभी ग्रह --हाँ ! हाँ ! हम सभी मिलकर आज आपसे बात करेंगे। आप हमें सूर्य देवता, चन्द्रमा देवता, बृहस्पति देवता जिन्हें आप बुला रहे थे वही समझ लीजिये।

शुक्र—आज तक आप सूर्य के नाम पर गेहूँ गाय सोना, चन्द्र के नाम पर भी चावल घी, मंगल के नाम पर सोना ताँबा घी प्रवाल, बुध के नाम पर मरकतमणि हाथी दाँत, (सूर्य—अरे ! बुध भैया तो हमारे बगल में ही वैठे हैं) बृहस्पति के नाम पर पुखराज सोना अन्न, शुक्र के नाम पर हीरा सोना चाँदी गौ, शनि के नाम पर भैंस (जोर की हँसी) काली गाय नीलमणि तेल, राहु के नाम पर कम्बल तेल वस्त्र घोड़ा एवं केतु के नाम पर कम्बल कस्तूरी रत्नादि दान माँगते रहे हैं। (बृहस्पति—हँसते हुये हाँ ! हाँ ! पण्डित जी तो सारा बाजार ही माँगते रहे हैं सूर्य--अरे भाई ! पण्डित जी के घर का काम भी तो चलना चाहिये, हा हा --) भला बताइये, यजमान यह सब दान करें तो ये नवग्रह शान्त कैसे हो जायेंगे ? और न दान कर तो कुपित कैसे हो जायेंगे ? इन जड़ देवों को दान से क्या लेना देना है ? (सभी हँसते हैं) ।

बृहस्पति--दान तो पण्डित जी के घर जायेगा, सूर्यलोक तो जायेगा नहीं फिर उनकी कैसी सन्तुष्टि और कैसी असन्तुष्टि वैसे भी ये चेतन तो हैं नहीं कि प्रसन्न या अप्रसन्न होंगे। (सभी—अरे वाह ! वाह !) ।

पण्डित-(सिर पकड़कर) अरे बाप रे ! जाओ जजमान ! तुम अन्दर जाओ, अब हम इनसे बात करेंगे, अब यहाँ सास्त्रार्थ होगा ।

सभी ग्रह—ठीक है ठीक है ।

यजमान—नहीं, हम भी यहीं बेठ कर बात सुनेंगे ।

ग्रह--(चिढ़ाते हुए) दक्षिणा गई ---।

बुध--पण्डित जी ! जिन पुराणों को आप प्रमाण मानकर हम नवग्रहों का कुल, गोत्र, एवं जन्म स्थान बतलाते हैं, उनके विषय में आपने कभी सोचा है कि ये नवग्रह मनुष्य देहधारी हैं ? या जड़देव ? आप सूर्य एवं चन्द्रमा को मनुष्य देहधारी मानते हैं। यह तो प्रत्यक्ष का भी अपलाप है।

चेला-(क्रोध से) क्या अपलाप है ? चलिये, गुरु जी ! नास्तिकों में क्या बैठना है ?

(पण्डित जी इशारा करके उसे रोकते हैं) सूर्य—मूर्ख है।

बुध-आप जब पूर्व दिशा में सूर्य को उदय होते हुए देखते हैं तथा रात्रि में चन्द्रमा को उदय होते हुए देखते हैं तो क्या ये आपको नरतन धारण करने वाले मनुष्य से लगते हैं ?

एक ग्रह—बोलिये पण्डित जी ! द्वितीय ग्रह—क्या बोलेंगे ?

बुध—फिर पुराणों के अनुसार मुझ बुध को यानी मुझे चन्द्रमा का पुत्र कैसे कहते हैं ? तथा बृहस्पति ग्रह की पत्नी तारा को मेरी माँ बताते हैं कैसी हैरानी की बात है ? भला द्युलोक स्थित ग्रहों का जन्म कलिंग. अंग और मगध आदि देशों में बताना तथा इनके काश्यप-आत्रेय-भारद्वाज आदि गोत्र बताना, कोरी गप्प नहीं तो क्या है ?

बृहस्पति—वाह रे भैया ! (बुध–हाँ) इतना ही थोडा, पण्डित जी लोगों ने तो हमारे शत्रु मित्र भी बतलाये हैं (ग्रह–अरे वाह !) पुराणों के अनुसार राहु ने समुद्र मन्थन के पश्चात् अमृत वितरण के समय छिपकर अमृत का पान किया अतः विष्णु ने उसे चक्र से मारा। राहु का सिर कट गया (सभी–हंस पडते हैं) और राहु बिना सिर के आज तक जीवित है। बिना सिर के किसी का जीवित रहना आज तक आप सबने कभी देखा है क्या ? (सभी–नहीं ! नहीं !) ये राहु केतु सिर एवं शरीर के अलग-अलग रहते हुवे

'नवग्रहों के शुभागमन' की एक प्रस्तुति

भी अपना वैर सूर्य और चन्द्रमा से ग्रहण के समय ग्रसकर निकाल रहे हैं। (सभी–हँसते हैं)

यजमान–अरे ! हमने जिऑग्रोफी (Geogrophy) से एम० ए० किया है (कोई–किस सन् में किया है ? पुनः कोई—फिर भी मुर्गा बने बैठे हैं) राहु केतु, सूर्य और चन्द्रमा को ग्रसते हैं ऐसा तो नहीं पढ़ा है। हम अच्छी प्रकार बता सकते हैं राहु और केतु कुछ नहीं है (एक ग्रह–ठीक है, ठीक है) यह तो चन्द्रमा जिस मार्ग से आकाश में भ्रमण करता है वह मार्ग वृत्त कहलाता है। क्रान्तिवृत्त भी इसी प्रकार एक वृत्त है। अब जिस बिन्दु को स्पर्श करता हुआ चन्द्रमा क्रान्तिवृत्त से उत्तर में जाता है वह राहु (सभी–ठीक, बिल्कुल ठीक) जिस बिन्दु को स्पर्श करता हुआ क्रान्तिवृत्त से दक्षिण में जाता है वह केतु है (सभी–हाँ ! हाँ ! वाह ! वाह !) हम इस सौर स्थिति को यहाँ कागज में नक्शा खींचकर दिखा सकते हैं। भूगोल की दृष्टि से यही बात सही है।

द्वितीय यजमान—जब उत्तर एवं दक्षिण के वृत्त का ही नाम राहु केतु है तो इन्हें ग्रह कहना भी उचित नहीं क्योंकि "ये गृह्णन्ति ते ग्रहाः" (वाह !) अर्थात् जो ग्रहण करते हैं प्रकाश आदि को धारण करते हैं वे ग्रह हैं। जैसे—चन्द्रमा सूर्य से प्रकाश ग्रहण करता है और सूर्य भी अपनी आकर्षण शक्ति से पृथिवी आदि लोकों को धारण कर रहा है तथा पृथिवी के रसों को अपनी किरणों से ग्रहण करता है। अतः वह भी ग्रह है। पर राहु केतु तो ग्रह नहीं हो सकते।

सभी—नहीं, नहीं ये तो वृत्त के नाम मात्र हैं पुनः इन्हें नवग्रहों में स्थान क्यों दिया गया है ?

केतु—यह हमारे पक्ष में सत्य बात यजमानों ने कही है।

राहु—ठीक है, ठीक है भैया !

बृहस्पति—ओह ! ये दोनों यजमान तो बड़े सुशिक्षित और समझदार हैं (सभी—हाँ ऽऽ) इन्होंने भूगोल की बात समझायी, सचमुच विज्ञान युक्त बात को ही तो मानना चाहिये।

केतु--और ये यजमान संस्कृतज्ञ भी हैं। ग्रह शब्द का अर्थ कितना अच्छा बताया।

राहु--फिर क्यों ? पण्डित जी की कपोल कल्पित बातों में ये फँसे हैं ?

बुध--हें ऽ हें ऽ,ऽ क्या करें ! इन्हें हजारों वर्षों से यही घुट्टी घुटवायी है सो सत्य बात भूल गये, हा ! हा ! हा ऽ हा ऽऽ !

सूर्य--भाई ! महा अन्धेर है, इन नवग्रहों का पण्डित जो ने आवाहन किया फिर अपने मन में ही सोच लिया कि वे आ गये मालूम होता है कि वे कोई चिऊँटी हैं, जो न आने की हलचल हुई, न उनके पैरों की चाप तक सुनायी पड़ी ! पण्डित जी मन के लड्डू फोड़ रहे हैं हा ऽऽ हा ऽऽ हा ऽऽ और उन्हें पाद्य, अर्घ्य, आचमन आदि समर्पित कर रहे हैं--

पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत् सरित् ॥ (यजु० ३४।११)

कहकर उन्हें पञ्चामृत स्नान कराया फिर शुद्धोदक स्नान कराया। अब इनसे कोई पूछे कि पञ्चामृत स्नान क्या होता है ? और शुद्धोदक क्या है ? क्या पञ्चामृत में पण्डित जी ने शहद इत्यादि की धारा बहाई थी ? कि पुनः उन्हें शुद्धोदक स्नान कराना पड़ा !

"पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः"

मन्त्र का यह अर्थ भी नहीं है उसका अर्थ तो आँख, कान आदि पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ सरस्वती वाणी को प्राप्त होती हैं (सभी--जी) अर्थात् ये इन्द्रियाँ विषयों को तो ग्रहण करती ही हैं, पर इनकी अभिव्यक्ति वाणी ही कर पाती है। अब और देखिये (सभी--क्या ?)--

"ओषधीः प्रतिमोदध्वम् पुष्पवतीः प्रसूवरीः । अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्ण्वः" (यजु० २।७७)

कहकर उन्हें माला फूल दिया। मन्त्र का अर्थ चाहे कुछ भी हो। वस्त्रं समर्पयामि, यज्ञोपवीतं समर्पयामि, चन्दनं समर्पयामि, कहकर उन्हें चन्दनादि समर्पित किया, पर कहाँ हैं वे सूर्य चन्द्र आदि ? जिन्हें चन्दन दे रहे हैं पण्डित जी, वस्त्र दे रहे हैं तथा यज्ञोपवीत समर्पित कर रहे हैं, ये सब मन ही मन में हो रहा है, यजमान तक नहीं देख पा रहे हैं कि ये सब किसे दिया जा रहा है ? किसको स्नान कराया जा रहा है ? (सभी–हा ऽ ऽ हा ऽ ऽ हा ऽऽ हा ऽ ऽ) ।

शुक्र—एक बात और भी है भैया ! (सूर्य–वो क्या ?) जो पण्डित जी लोग कहते हैं कि नवग्रह पूजा सनातन काल से चली आयी है तो पुराणों के अनुसार तो हम नवग्रहों का जन्म ही रामायणकालीन तथा इससे परवर्त्ती भी है सृष्टि के आरम्भ का नहीं, फिर नवग्रह-पूजा बीच के काल का ढोंग हुआ न कि सनातनकालीन, क्योंकि जन्म से पूर्व तो पूजा होगी नहीं (नहीं) (दोनों यजमान—ठीक कहा) ।

शनि—भाई (शुक्र–हाँ !) अभी ये पण्डित जी हम लोगों के आवाहन में गटर-गटर वेद के मन्त्र बोल रहे थे—

ओ३म्—आ कृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठ । सूर्याय नमः ।

ओ३म् इमं देवा असपत्नँ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इममुष्य पत्र-

मनुष्यैं पत्रमस्यैं विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानांऽ राजा ॥ (यजु० ९।४०) ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ । चन्द्रमसे नमः ॥

पर सोचना यह है कि क्या सचमुच इन मन्त्रों का अर्थ हम सौरग्रहों के आवाहन वाला है ?

चन्द्र--नहीं जी ! किसी भी मन्त्र का अर्थ करते समय उस मन्त्र का विषय = देवता क्या है ? यह तो सोचना चाहिये। नवग्रहों के आवाहन में जो मन्त्र बोले गये हैं उनमें कतिपय तो ऐसे ही हैं जैसे "कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा भानुमती ने कुनबा जोड़ा" (वाह भई वाह) तद्यथा--बुध के आवाहन में जो मन्त्र बोला गया--

ओ३म् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते सᳪ सृजेथामयं च...... ॥ (यजु० १५।५४)

उसका देवता = विषय तो अग्नि है। यहाँ मन्त्र में कहा गया है--हे अग्ने ! उद्बुध्यस्व अर्थात् हे अग्नि अथवा अग्नि समान तेजस्वी विद्वान् यजमान ! आप प्रकाशित होओ। मन्त्र में उद्बुध्यस्व यह क्रियापद है, इससे बुध अक्षर समूह मात्र को देखकर बुधग्रह का आवाहन अर्थ भिड़ा दिया है जिसे सुनकर भी हँसी आती है। (जोर की हँसी)।

द्वितीय यजमान--सचमुच मन्त्र के अर्थ में तो यजमान को ही जागृत एवं प्रकाशित तथा यज्ञ करने के लिये कहा गया है बुध ग्रह की तो कोई बात ही नहीं है।

चन्द्र--और भी सुनिये-ओ३म् शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः ॥ (यजु० ३६।१२)

ॐ भूर्भुवः स्वः शनैश्चर इहागच्छ इह तिष्ठ । शनैश्चराय नमः ॥

इस मन्त्र में शम्+नः ये दो शब्द हैं। इन दोनों शब्दों को देखकर शनैश्चर देवता के आवाहन की कल्पना कर ली है। जब कि मन्त्र का देवता आपः=परमेश्वर है। और मन्त्र में यह प्रार्थना की गई है कि हे सर्वव्यापक आपः= परमेश्वर हमारी अभिलाषा पूर्ण हो और आप हम पर सुख की वर्षा करो। (सभी—बहुत अच्छा ! बहुत अच्छा !) ।]

यजमान —समझ में आ रहा है न, पण्डित जी ! (सभी— ऽ हऽ हऽ)।

सूर्य—भाई ! आपने तो मन्त्र में जहाँ कहीं भी ग्रहों के नाम का अक्षरसाम्य देखा वहीं इस मन्त्र को उस ग्रह के आवाहन में जोड़ दिया, यह बताया, पर हम तो आपको यह अन्धेर बताते हैं (चन्द्र क्या ?) कि राहु के आवाहन का जो **ओ३म् काण्डात्काण्डातप्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्र तनु सहस्रेण शतेन च** (यजु० १३।२०) मन्त्र है उसमें तो कहीं किसी प्रकार भी राहु शब्द खींचकर दिखाया नहीं जा सकता (सभी–नहीं दिखाया जा सकता) न वेद में इसके आगे पीछे राहु शब्द है। इसका देवता भी पत्नी है। फिर भी राहु के साथ भिड़ाकर इस बेचारे मन्त्र की क्यों दुर्गति कर डाली गई। क्या पण्डित जी ! आप इस मन्त्र में राहु शब्द दिखा सकतें हैं ?

पण्डित जी—(अटकते हुवे) न……नहीं नहीं ऐसा तो नहीं है पर सूर्य के आवाहन वाला जो (लड़खड़ाते हुवे)

आ कृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥

मन्त्र है उसका देवता तो सूर्य है। (यजु० ३३।४४)

बुध--वाह पण्डित जी ! आपने मौन तो तोड़ा। ठीक है, उसका देवता सूर्य है पर वह कहता क्या है ? उसका अर्थ सूर्य का आवाहन नहीं है किन्तु इस मन्त्र में बताया है कि सूर्य अपनी आकर्षण शक्ति से भूगोलादि लोकों को धारण कर रहा है, वह जल-वृष्टि कराता है तथा चन्द्र की भाँति घूम रहा है। कहीं पर देवता-साम्य मिल जाने पर भी यह देखना चाहिये कि यह मन्त्र कहता क्या है ?

ओ३म् अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपाᳬ रेताᳬसि जिन्वति ॥ (यजु० ३।१२) ॐ भूर्भुवः स्वः भौम इहागच्छ इह तिष्ठ। भौमाय नमः ॥

इस मन्त्र को आप मंगल ग्रह के आवाहन में लगाते हैं परन्तु इसका देवता अग्नि है। चन्द्रमा के आवाहन वाले मन्त्र—

इमं देवा असपत्नᳬ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुमुष्य पुत्रममुष्यै पुत्र-मस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाᳬ राजा ॥ (यजु० ९।४०) ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ। चन्द्रमसे नमः ॥

इसमें केवल सोम शब्द को देखकर एवं सोम को चन्द्रमा का पर्याय-वाची मानकर आप चन्द्रमा के आवाहन में मन्त्र को लगा देते हैं, तो यह कैसे सम्भव है ? क्योंकि इस मन्त्र में तो स्पष्ट राज्य व्यवस्था के सम्बन्ध में कहा गया है। मन्त्र में कहा है कि क्षत्रियों के पालन के लिये, धार्मिक जनों की रक्षा के लिये, आप सबको शत्रु रहित कीजिये तथा हम ब्राह्मणों का राजा तो सोम=परमेश्वर है। आप बृहस्पति के आवाहन में—

बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद् विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।
उपयामगृहीतोऽसि बृहस्पतये त्वैष ते योनिर्बृहस्पतये त्वा॥
(यजु० २६।३)

ॐ भूर्भुवः स्वः बृहस्पते इहागच्छ इह तिष्ठ। बृहस्पतये नमः।

इस मन्त्र में केवल सम्बोधनान्त 'बृहस्पते' शब्द को देखकर उसे कैसे बृहस्पति के आवाहन में लगा लेते हैं? एक शब्द के अनेक अर्थ भी तो होते हैं।

[मध्य में एक पञ्चवर्षीया बालिका का आगमन]

बालिका—पणाम। पण्डित जी! पणाम। बालिका-परसादी द दाऽऽ। पण्डित—चुप करा, बालिका—दैऽ दाऽऽ, दैऽ दाऽऽ। कोई ग्रह—पण्डित जी दे दीजिये न, चली जाये। पण्डित—ला अच्छा, पकड़ाऽ जाऽऽ भागा। कोई ग्रह—पण्डित जी के यहाँ तो परसादी मिलती है, हाऽऽ हा।

बुध—हाँ! तो बृहस्पति ग्रह के सम्बन्ध में कह रहे थे कि एक शब्द के अनेक अर्थ भी होते हैं फिर कैसे कहा जाये कि यहाँ बृहस्पति ग्रह को ही कहा जा रहा है? परमेश्वर को नहीं। शुक्र ग्रह के आवाहन में आपने—

अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानꣳ शुक्रमन्धस इन्द्रस्ये-न्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु (यजु० १९।७५) ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्र इहागच्छ इह तिष्ठ शुक्राय नमः।

इस मन्त्र को विनियुक्त कर दिया यह तो महान् अनर्थ है। इस मन्त्र में तो राज्य की उन्नति किस प्रकार हो सकती है यह

बताया गया है तथा मन्त्र में शुक्र शब्द अन्न के विशेषण के रूप में आया है (बृहस्पति—न कि शुक्र ग्रह की पूजा के लिये) । नवग्रहों की पूजा मध्यकालीन अज्ञान का परिणाम है इसका वेदों से तो कदापि सम्बन्ध नहीं । वेदों में जड़ पूजा की बात कहीं है ही नहीं । हाँ ! जड़देवों से विभिन्न प्रकार से लाभ उठाने की बात अवश्य है । [**पण्डित जी अपना शंख पीछे रख देते हैं**] ।

सूर्य—पण्डित जी ! आपने अपना यह शंख पीछे क्यों रख दिया ? (सभी–हाऽऽ हाऽऽ) ।

शनि—भैया ! मध्यकाल में तो मन्त्रों के अर्थ बिगाड़ ही दिये गये पर इन आकाशस्थ ग्रहों को बदनाम भी कितना किया गया तुम पर शनैश्चर चढ़े हैं, तुम्हें राहु तंग कर रहा है, मंगल की कोप दृष्टि है अतः अमुक-अमुक पूजा करो, भला ! ये बिचारे किसी पर क्या कोप करेंगे ? ये तो ईश्वरीय व्यवस्थानुसार आकाश में गतिमान हैं इनका प्रभाव हमारे शरीर पर तो पड़ सकता है पर पुरुषार्थ पर नहीं (सभी—नहीं नहीं) पुरुषार्थ का ही अच्छा बुरा-फल हमेंमिलेगा इनकी कोप दृष्टि हमारा कुछ नहीं कर सकती (सभी—हाँ !हाँ ! बहुत अच्छा, बिल्कुल ठीक) ।

[पार्श्व से तीन महिलाओं का आगमन]

शनी ग्रह (महिलाओं को देखकर)—अरे ! आइये, आइये, बैठिये ।

कमला—भाइयो ! (सभी–हाँ ऽऽ) आप लोगों की सारी बातें हमने अभी पर्दे के पीछे से सुनी हैं (अच्छा !) जो बहुत ही बुद्धिमत्ता पूर्ण हैं । हमें तो पण्डित जी ने यही कहा था कि **"स्त्रीशूद्रौ नाधीयाताम्"** अर्थात् स्त्रियों को शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं है । हम यहाँ वेद मन्त्र पढ़ेंगे सो तुम यहाँ नहीं बैठ सकतीं अतः हम पर्दे के पीछे बैठी रहीं (आश्चर्य से—अच्छा !) और आप सब की बातें सुनती रहीं। अब हमें पूरा पता लग गया है कि सर्वत्र शुभ संस्कारादि

में इन नवग्रहों की पूजा कराना, इनका कुपित होना बताना, इनके नामों के साथ वेदमन्त्रों का जोड़ देना ये सब बातें लोगों को डराने और धमकाने के लिये हैं। (हाँ ऽऽ ! ठीक है) इनका भाग्यादि से कोई सम्बन्ध नहीं (नहीं, ठीक है, बहुत अच्छा)।

सुमित्रा--ठीक कह रही हो शीला ! ऐसी जड़ता की बातों से हमारा ही नहीं हमारे देश का भी बहुत अकल्याण हुआ है। बख्तियार खिलजी ने जब बंगाल पर चढ़ाई की थी तो वहाँ का राजा जो झूठे फलित ज्योतिषियों का भक्त था (शीला–हाँ ऽऽ) वह युद्ध पराक्रम से लड़ने के बजाय राज्य छोड़ कर चुपचाप भाग गया था (सभी–हऽऽ नया बात सुनी) और बख्तियार खिलजी ने बिना लड़े ही अपनी कूटनीति से राज्य पर अधिकार कर लिया था। (ऐसा क्यों ?) केवल इस लिये कि बंगाल का राजा इन ज्योतिषियों का अन्ध भक्त था और बख्तियार खिलजी ने इन्हें लालच देकर अपने में मिला लिया था (अच्छा !) इन ज्योतिषियों ने कपट जाल रचा और राजा को कहा कि अभी लड़ाई मत करो तुम्हारे ग्रह खराब हैं (सभी–ह ऽऽ ह ऽऽ ह ऽऽ वही बात, कमाल है) और वह राज्य से भाग खड़ा हुआ।

प्रमिला--सुमित्रा बहिन ! ऐसन देश की दुर्दसा को बात त बहुत बाटे पर ई चर्चा के प्रसग में हम कुछ बात पूछल चाहत बानी। (हाँ ! पूछिये) का चन्द्र यानी सोम, मंगल, बुध, बृहस्पति, शनि आदि ग्रहन के ही नाँव पर सोमवार, मगलवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शनिवार आदि दिनन क नांव रक्खल गईल बाटे ऽऽ अ जऊन समाज में ई तरीके के कुछ, चर्चित बात बाटै कि जंसे सोमवार के शकर जी क दिन हौ, मगलवार हनुमान् जो क दिन हौ, बृहस्पतिवार, शनिवार के बार न धोवे के चाही। का वास्तव में ई सब बात साँच बाटै कि स्वार्थवंस स्वार्थी लोगन द्वारा समाज में

खाली अफ़वाह फैलावल वाटै अ जऊन नवग्रह पूजा के बात बाटै तऊन ई ग्रह लोगन से खाली हिन्दू भाई लोगन हो पीड़ित बाटें मुसलमान भाई; क्रिश्चियन भाई लोगन का कउनो पीड़ा नैखे बाटै (एक साथ खूब जोर की हँसी) काहैं से कि हम त कभी मुसलमान भाई क्रिश्चियन भाई लोगन के नवग्रह पूजा करावत के देखले नाहीं बानीं। ई विषय में का बातबाटै ऐ के हम जानै चाहत बानीं।

सूर्य—हाँ बहिनी लोगन ! ईऽऽ सब बातें भी भ्रमजाल में फँसाने के लिये स्वार्थी लोगों ने रच दी हैं। इन सब बातों में कोई तर्क या हेतु नहीं है।

प्रमिला—ठीक बा भैया लोगन ! ई बात की त जानकारी हमरा के पहिले से ही बाटै कि मध्यकाल में जब शिक्षा के लोप हो गईल, ब्राह्मण लोग वेदपाठ कईलै भुल गईलन तब पुराण की रचना भईल। ई त सौभाविकी बात बाटै कि जहाँ शिक्षा के लोप हो जाई ओ जा स्वार्थवाद के उदय हो जाई (सूर्य हाँ ! हाँ) ब्राह्मण लोग का पहिलहीं से तनी मनी बेद के मन्त्र याद रहे और कुछ अपना मन से बनावटी बात लैके लोग पुराण को रचना कै देहलीं फिर भी ऐसन शंका त हम जानबूझ के रखले हैं कि तनि औरी बढिया से हमनी के जानकारी मिल जाई। बहुत २ धन्यवाद बाटै भैया लोगन हमनी के बहुत बढ़िया जानकारी मिलल, पर ई सब बातन के प्रभाव हमनीके पण्डित जी पर का परल बाटै ई जाने के हम बड़ा इच्छुक बानी। (सभी हम सब भी इच्छुक हैं)।

[पण्डित जी खड़े होकर चेले को कहते हैं—तुम ये सब लेकर अन्दर चलो]।

पण्डित—मेरी पवित्र बहिनों ! एवं भाइयो ! मुझ पर इन सब बातों का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है (सभी–वाह ! वाह !) सचमुच ! नवग्रहों के सम्बन्ध में पुराणों की जन्म कथा, मानुषी कल्पना, विज्ञान के एकदम विरुद्ध है (ठीक ! ठीक) परम्परागत नवग्रह पूजायें हमारे

'नवग्रहों के शुभागमन' की एक प्रस्तुति

कुल में होती रहीं अतः हम भी उसको मानते आये (सभी-और क्या करते ?) किन्तु आज हमें अन्धकार में प्रकाश का रास्ता मिला है (सभा-अरे ! वाह, पण्डित जी कमाल, कमाल) हमारे ज्ञान-पट खुल गये हैं और हमें अच्छी तरह समझ में आ गया है कि जो तर्क की कसौटी से जाना जाता है वही धर्म है "(सभी हाँ ! वही धर्म है) मैं आज से वैदिक विधि से ही संस्कारादि कराऊँगा (सभा-वाह ! वाह !, यह तो विजय है हमारी; गजब कर दिया पण्डित जी ने) माताओं बहिनों का स्थान बहुत ऊँचा है, उन्हें वेद पढ़ने का पूर्ण अधिकार है मुझे आज यह भी पता चला है, सचमुच नवग्रह प्रतिनिधि बन्धुओं का आज का शुभागमन मेरे जीवन का सौभाग्य-दिवस है।

सभी—हम लोगों का भी सौभाग्य है, कि आप जैसे तेजस्वी, उदात्त चरित्र वाले व्यक्ति हमें मिले हैं।

[एक खद्दरधारिणी महिला का प्रवेश]

सभी—आइये ! आइये…

महिला—भाइयो एवं बहिनों ! मैं आर्यसमाज पानीपत से आयी हूं (सूर्य-बैठिये, बैठिये) अभी बहुत देर से यहाँ बैठकर मैंने आप लोगों की सभी बातें सुनीं इस समय मैं पण्डित जी की बात सुनकर मुग्ध हो गई हूं। सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये यह आर्य समाज का नियम है, इसी के अनुसार पण्डित जी ने यहाँ कही गई सभी बातें स्वीकार की हैं अतः मैं पण्डित जी का स्वागत करना चाहती हूं। (सभी—हाँ ! हाँ ! करिये, करिये—वाह ! वाह ! करतल ध्वनि)।

[मध्य में उसी अष्टवर्षीया बालिका का प्रवेश]

बालिका—पण्डित जी ! मैं फिर से आपका स्वागत करने आ गई हूं (कहकर माला पहिनाती है)।

पण्डित—बैठो बेटो ! बैठो।

प्रमिला—हम हुं त ए विषय में कुछ कहल चाहत बानीं सभी–हाँ ! हाँ ! कहिये, कहिये, इधर से आ जाइये, इधर आ जाइये) हमनी के पण्डित जी बहुत बढ़िया आदमी बानीं ए के जानके हमरा बहुत खुशी भईल बाटें पण्डित जो के बात पर मुग्ध हो के तुच्छ भेंट ५०१) हम हुं देत बानीं, (सभी वाह !वाह ! करते हुवे तालियों की गड़गड़ाहट के साथ स्वागत करते हैं) ।

पण्डित—भाइयो एवं बहिनों ! आप सब लोगों ने मुझे सम्मानित किया है इसके लिये मेरी ओर से आप सभी लोगों का बहुत-बहुत धन्यवाद है। अब मैं अपनी तरफ से ५०१) रु० "पाणिनि कन्या महाविद्यालय" को दान में दे रहा हूँ (वाह ! वाह !) क्योंकि इसी विद्यालय के प्रांगण में बैठकर आज मेरे विचारों में परिवर्त्तन आया है।

(सभी वाह ! वाह ! कमाल कर दिया………तालियों की गड़गड़ाहट) ।

[प्रमिला मुग्ध भाव से कुछ देर बैठती है तदनन्तर मधुर स्वर से एक गीत बोलती है जिसको सभो पात्र सोत्साह गातें हैं—]

ऋषिराज दयानन्द अइलैं हो रामा, बड़ा काम कइलें

अबला अनाथ अछूत बचउलैं
शुद्धि की रीति चलइलैं हो रामा। बड़ा काम··· ···

नारिन के ऋषि वेद पढइलैं
यज्ञ-अधिकार दिलवलैं हो रामा। बड़ा काम··· ···

परदेशी राज ऋषि पाप बतवलैं
चेतना स्वराज के जगइलैं हो रामा। बड़ा काम··· ···

जड़ पेड़ नवग्रह कै पूजा छोड़वलैं
सन्ध्या हवन सिखलवलैं हो रामा। बड़ा काम··· ···

आर्य पुरुष सब एक होइ गइलैं
आर्य समाज बनवलैं हो रामा। बड़ा काम··· ···

गुरुदत्त श्रद्धानन्द लाजपत अइलैं
बिस्मिल भगत बलि भइलैं हो रामा। बड़ा काम ... ...

"शर्मा" सुखद दिन देसवा के अइलैं
अंग्रेज देश छोड़ि गइलैं हो रामा। बड़ा काम... ...

अपने ही शासक बन रजवा संभरलैं
अपनै विधान बनि गइलैं हो रामा। बड़ा काम... ...

[पर्दा गिरता है]
॥ समाप्त ॥

—: o :—